गायत्री की असंख्य शक्तियाँ

श्रीराम शर्मा आचार्य

गायत्री की असंख्य शक्तियाँ

गायत्री की असंख्य शक्तियाँ और उनका सान्निध्य

परब्रह्म परमात्मा की चेतना, प्रेरणा, सक्रियता, क्षमता एवं समर्थता को गायत्री कहते हैं। यह इस विश्व की सर्वोपरि शक्ति है। अन्य छुट-पुट शक्तियाँ जो विभिन्न प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त होती हैं, वे देव नामों से पुकारी जाती हैं। यह समस्त देवशक्तियाँ उस परम शक्ति की किरणें ही हैं, उनका अस्तित्व इस महत्तत्व के अंतर्गत ही है। उत्पादन, विकास एवं निवारण की त्रिविध देव शक्तियाँ ब्रह्मा, विष्णु, महेश के नाम से विख्यात हैं। पंच तत्त्वों की चेतना को आदित्य, वरुण, मरुत और अंतरिक्ष कहकर पुकारते हैं। इंद्र, बृहस्पति, अर्यमा, पूषा, त्वष्टा, गणेश, अश्विनी, वसु, विश्वेदेवा आदि सृष्टि के विभिन्न प्रयोजनों में संलग्न शक्तियाँ ही हैं। चूँकि ये दिव्य हैं, प्राणियों को उनका अपार अनुराग मिलता है, इसलिए उन्हें देवता कहते हैं और श्रद्धापूर्वक पूजा, अर्चा एवं अभिवंदन करते हैं। यह सभी देवता उस महत्तत्व के स्फुल्लिंग हैं जिसे अध्यात्म भाषा में गायत्री कहकर पुकारते हैं। जैसे जलते हुए अग्नि कुंड में से चिनगारियाँ उछलती हैं, उसी प्रकार विश्व की महान शक्ति सरिता गायत्री की लहरें उन देवशक्तियों के रूप में देखी जाती हैं। संपूर्ण देवताओं की सम्मिलित शक्ति को 'गायत्री' कहा जाए तो यह उचित ही है।

हमें जितना भी कुछ वैभव, उल्लास मिलता है, वह शक्ति के मूल्य से ही मिलता है। जिसमें जितनी क्षमता है वह उतना ही सफल होता है और उतना ही वैभव उपार्जित कर लेता है। इंद्रियों में शक्ति रहने तक ही भोगों को भोगा जा सकता है। ये अशक्त हो जाएँ तो आकर्षक-से-आकर्षक भी उपेक्षणीय और घृणास्पद लगते हैं। नाड़ी-संस्थान की क्षमता क्षीण हो जाए तो शरीर का सामान्य क्रिया-कलाप भी ठीक तरह चल नहीं पाता, मानसिक शक्ति घट जाने पर मनुष्य की गणना विक्षिप्तों और उपहासास्पदों में होने लगती है। धन-शक्ति न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहने पर दर-दर का भिखारी बनना पड़ता है। मित्र शक्ति न रहने पर एकाकी जीवन सर्वथा निरीह और निरर्थक प्रतीत होने लगता है। आत्मबल न होने पर प्रगति के पथ पर एक कदम भी यात्रा नहीं बढ़ती। जीवनोद्देश्य की पूर्ति आत्मबल से रहित व्यक्ति के लिए सर्वथा असंभव ही है।

अतएव शक्ति का संपादन भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने के लिए नितांत आवश्यक है। हमें जान ही लेना चाहिए कि भौतिक जगत में जितनी पंचभूतों को प्रभावित करने एवं आध्यात्मिक जगत में जितनी भी विचारात्मक, भावनात्मक तथा संकल्पात्मक शक्तियाँ हैं, उन सबका मूल उद्गम एवं असीम भांडागार वह महत्तत्व ही है, जिसे गायत्री नाम से भी संबोधित किया जाता है। इस भांडागार में जितने ही गहरे उतरा जाए उतनी ही बहूमूल्य रत्न-राशि उपलब्ध होने की संभावना बढ़ती चली जाती है।

विश्व के आत्मोत्कर्ष के इतिहास पर दृष्टिपात करने से यही प्रतीत होता है कि चरित्र को उज्ज्वल एवं विचारों को उत्कृष्ट रखने के अतिरिक्त हमारे इसी सीढ़ी पर चढ़ते हुए वे देव पुरुषों में गिने जाने योग्य स्थिति प्राप्त कर सके थे। देवदूतों, अवतारों, गृहस्थियों, महिलाओं, साधु, ब्राह्मणों, सिद्ध पुरुषों का ही नहीं साधारण सद्गृहस्थों का उपास्य भी गायत्री ही रही है और इस अवलंबन के आधार पर न केवल आत्म-कल्याण का श्रेय साधन किया है वरन् भौतिक सुख-संपदाओं की सांसारिक आवश्यकताओं को भी आवश्यक मात्रा में उपलब्ध किया है।

संसार में अनेक देवताओं के रूप में जो अनेक शक्तियाँ दृष्टिगोचर हो रही हैं जिनकी सहायता से हमारा जीवन धारण, पोषण, अभिवर्धन एवं श्रेय साधन हो रहा है। वे गायत्री महाशक्ति के अंतर्गत आती हैं। उसे यों भी कहा जा सकता है कि वे गायत्री स्वरूप ही हैं। विश्वव्यापी जल तत्त्व—नदी, सरोवरों, कूप, तालाबों, जलाशयों, हिमश्रृंगों, समुद्र और बादलों में विभिन्न रूप, स्वाद

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और स्थिति में दिखाई पड़ता है। उसी प्रकार यह गायत्री महातत्त्व अगणित देव-शक्तियों के रूप में ही जाना जा सकता है। शास्त्र कहता है—

अदितिर्देवा गंधर्वा मनुष्याः पितरोऽसुरास्तेषां सर्वभूतानां माता मेदिनी पृथिवी महती मही सावित्री, गायत्री जगत्युर्वी पृथ्वी बहुला विश्वाभूता। —महानारायणोपनिषद् १३.७

देव, गंधर्व, मनुष्य, पितर, असुर इनका मूल कारण अदिति अविनाशी तत्त्व है। यह अदिति सब भूतों की माता मेदिनी और मातामही है। उसी विशाल गायत्री के गर्भ में विश्व के संपूर्ण प्राणी निवास करते हैं।

शक्तिः स्वाभाविकी तस्य विद्या विश्वविलक्षणा।
एकानेकस्य रूपेण भाति भानोरिव प्रभा॥
अनंताः शक्तयो यस्या इच्छाज्ञानक्रियादयः।

—शिवपुराण ७.२.७.१

इच्छाशक्तिर्महेशस्य नित्या कार्य्यनियामिका॥
ज्ञानशक्तिस्तु तत्कार्यं करणं कारणं तथा।
प्रयोजनं च तत्त्वेन बुद्धिरूपाध्यवस्यति॥
यथेप्सितं क्रियाशक्तिर्यथाध्यवसितं जगत्।
कल्पयत्यखिलं कार्यं क्षणात् संकल्परूपिणी॥

—शिवपुराण-वायु-संहिता ७.२.४.३३

विश्व लक्षण वाली विद्या उस परब्रह्म की स्वाभाविक शक्ति है। वह सूर्य की प्रभा की तरह एक ही अनेक रूपों में प्रकट होती है। इच्छा, ज्ञान, क्रिया आदि उसकी अनंत शक्तियाँ हैं। ये ही दैवी शक्तियाँ संसार के समस्त कार्यों का नियंत्रण करती हैं। उसकी शक्ति ही कार्य और कारण के रूप में काम करती है और वही अपनी संकल्प शक्ति से अनादिकाल से इसका संचालन करती आई है।

गंगा च यमुना चैव विपाशा च सरस्वती।
सरयूः रेविका सिंधुर्नर्मदैरावती तथा॥
गोदावरी शतद्रूश्च कावेरी देवलोकगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कौशिकी चंद्रभागा च वितस्ता च सरस्वती ॥
गंडकी तापिनी तोया गोमती वेत्रवत्यपि।

गंगा, यमुना, विपाशा, सरस्वती, सरयू, रेविका, सिंधु, नर्मदा, ऐरावती, गोदावरी, शतद्रु, कावेरी, कौशिकी, चंद्रभागा, वितस्ता, गंडकी, तापिनी, तोया, गोमती, वेत्रवती आदि समस्त सरिताएँ तुम्हीं हो।

इडा च पिंगला चैव सुषुम्ना च तृतीयका।
गांधारी हस्तिजिह्वा च पूषाऽपूषा तथैव च ॥
अलंबुसा कुहूश्चैव शंखिनी प्राणवाहिनी।
नाडी च त्वं शरीरस्था गीयसे प्राक्तनैर्बुधैः ॥

इड़ा, पिंगली, सुषुम्ना, गांधारी, हस्तजिह्वा, पूषा, अपूषा, अलंबुषा, कुहू, शंखिनी, प्राणवाहिनी—ये शरीर में टिकी हुई समस्त नाड़ियाँ भी तुम्हीं हो।

हृत्पद्मस्था प्राणशक्तिः कंठस्थास्वप्ननायिका।
तालुस्था त्वं सदाधारा बिंदुस्था बिंदुमालिनी ॥
मूले तु कुंडलीशक्तिर्व्यापिनी केशमूलगा ॥

—देवी भाग० १२.५.१७-२२

हृदय कमल में टिकी हुई प्राणशक्ति, कंठ में स्थित स्वप्नशक्ति, तालु में सदाधारा, भौहों के मध्य बिंदुमालिनी, मूलाधार में कुंडली शक्ति, केशमूल में व्यापिनी शक्ति तुम्हीं हो।

गरिष्ठा च वराही च वरारोहा च सप्तमी।
नीलगंगा तथा संध्या सर्वदा भोगमोक्षदा ॥

—देवी भाग० १२.५.१०

गरिष्ठा, वराही, वरारोहा, नीलगंगा, संध्या तथा भोगमोक्षदा।

हंसस्था गरुडारूढा तथा वृषभवाहिनी।
ऋग्वेदाध्यायिनी भूमौ दृश्यते या तपस्विभिः ॥

—देवी भाग० १२.५.५

ब्राह्मी हंसारूढ़ा, सावित्री वृषवाहिनी और सरस्वती गरुड़ारूढ़ हैं। इनमें से ब्राह्मी ऋग्वेदाध्यायिनी, भूमितल में तपस्वियों द्वारा देखी जाती हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ब्रह्मांड में संव्याप्त अनेक शक्तियाँ इस जगत् का संचालन एवं नियंत्रण करती हैं। उन्हीं के कारण संसार इतना सुंदर और गतिशील दिखाई पड़ता है। यदि यह शक्तियाँ न होतीं और केवल जड़ पदार्थ ही इस संसार में भरे होते तो यहाँ श्मशान जैसी नीरवता का ही साम्राज्य होता, न कोई हलचल होती न परिवर्तन की गुंजायश रहती। तब न प्राणियों, वनस्पतियों का आविर्भाव होता और न उनके कारण जो विविध-विध, क्रियाकलाप चल रहे हैं, उनकी कोई संभावना रहती। संसार का जो भी स्थूल, सूक्ष्म स्वरूप हमारे सामने उपस्थित है, उसके मूल में वे अदृश्य शक्तियाँ ही काम कर रही हैं, जिन्हें देवताओं अथवा देवियों के नाम से पुकारा जाता है। स्मरण रखने की बात यह है कि यह सारा शक्ति परिवार जगज्जननी गायत्री महाशक्ति का ही सृजन, निर्माण, वैभव एवं विस्तार है। हम गायत्री महाशक्ति को अपने में जितना ही धारण करते हैं, उतना ही वह अधिकार प्राप्त हो जाता है, जिससे विश्वव्यापी शक्ति शृंखला के साथ अपना संबंध स्थापित कर सकें। उन्हें अभीष्ट प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त कर सकें। यह क्षमता जिन्हें उपलब्ध हो जाती है, वे सिद्ध पुरुष कहलाते हैं। सामान्य पुरुषों को इन शक्तियों के आधिपत्य में रहना पड़ता है, वे परिस्थितियों के दास रहते हैं, पर जिन्हें शक्तियों से संबंध बनाने एवं उन्हें मोड़ने का अधिकार मिल जाता है, वे परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना लेते हैं। इस अनुकूलता के आधार पर वे अपना और असंख्य दूसरों का भला कर सकते हैं। शक्तिरूपा गायत्री के बारे में शास्त्र कहते हैं—

भ्राजते दीप्यते यस्माज्जगदन्ते हरत्यपि।
कालाग्निरूपमास्थाय सप्तार्चिः सप्तरश्मिभिः॥

—याज्ञ० स्मृतिः ९।५३

जिस तेज के प्रताप से यह जगत् शोभित, वर्द्धित एवं सचेतन होकर अंत में समाप्त हो जाता है, वही सप्तार्चि तथा सप्तरश्मियुक्त सत्ता कालरूपी अग्नि की भाँति रूप धारण करती है।

त्वमेव संध्या गायत्री सावित्री च सरस्वती।
ब्राह्मी च वैष्णवी रौद्री रक्ता श्वेता सितेतरा॥

—दे०भा० १२.५.३

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संध्या, गायत्री, सावित्री, सरस्वती, ब्राह्मी, वैष्णवी, रौद्री, रक्ता, श्वेता, कृष्णा तुम्ही हो।

ततः परा पराशक्तिः परमा त्वं हि गीयसे।
इच्छाशक्तिः क्रियाशक्तिर्ज्ञानशक्तिस्त्रिशक्तिदा॥

—देवी० भाग० १२.५.१६

तुम्हीं परा, परमशक्ति कही जाती हो। इच्छाशक्ति और ज्ञानशक्ति भी तुम्हीं हो।

रुद्रलोकं गता त्वं हि विष्णुलोकनिवासिनी।
त्वमेव ब्रह्मणो लोकेऽमर्त्यानुग्रहकारिणी॥

—देवी भाग० १२.५.७

सावित्री रुद्र लोक में, सरस्वती विष्णुलोक में और ब्राह्मी ब्रह्मलोक में विराजमान रहती हैं—ये सब प्राणियों पर कृपा करने वाली हैं।

मानव-शरीर में अनेक शक्तियाँ हें, उसके मस्तिष्क एवं हृदय में इतनी अद्‌भुत क्षमताएँ हैं, जिनका कोई पारावार नहीं। देखने में सभी मनुष्य लगभग एक जैसे प्रतीत होते हैं। हाड़-मांस, इंद्रियाँ, अंग, अवयव, आहार-विहार, स्वभाव, अभ्यास, लंबाई, चौड़ाई की दृष्टि से मानव-प्राणियों से कुछ बहुत ज्यादा अंतर दिखाई नहीं देता, पर उनमें जो सूक्ष्म विशेषताएँ सन्निहित हैं, उन्हीं की न्यूनाधिकता से कोई गई-गुजरी स्थिति में पड़ा रहता है, कोई उन्नति के उच्चशिखर पर जा पहुँचता है। बहुतों को इन क्षमताओं के अभाव में दुःख-दारिद्र्य से भरा शोक-संतापग्रस्त जीवन जीना पड़ता है, पर जिसमें कुछ विशेषताएँ प्रतिभा के रूप में अधिक होती हैं, वे उन उपलब्धियों के कारण अनेक दिशाओं में सफलताएँ प्राप्त करते हैं और सुख-शांति का लाभ लेते हुए यशस्वी एवं तेजस्वी जीवन व्यतीत करते हैं। इन शक्ति संस्थानों से बढ़कर भी अदृश्य ब्रह्मांड में कुछ देव शक्तियाँ हैं, जो मनुष्य की सत्ता से भी सामर्थ्यवान हैं और उनसे लाभान्वित होने का भी विज्ञान है। भारतीय दर्शन की विशेषता है कि देव शक्तियों का यह वैज्ञानिक अनुसंधान ही रहा है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विश्वव्यापी ईश्वरीय चेतना शक्ति प्रवाह गायत्री से संबंध स्थापित करके मनुष्य कितने प्रकार के लाभ प्राप्त कर सकता है ? इसकी सही गणना कर सकना तो कठिन है, पर प्राचीनकाल के तत्त्वदर्शियों ने उनकी एक अनुमानित सीमा एक सहस्र मानी है। जिस प्रकार किसी जड़ी-बूटी का वैज्ञानिक विश्लेषण करके उसके भीतर पाए जाने वाले पदार्थों, क्षारों, विटामिनों तथा गुणों की व्याख्या की जाती है, उसी प्रकार गायत्री महाशक्ति का विश्लेषण भी प्राचीनकाल के अज्ञात तत्त्ववेत्ता लोगों ने किया है और निरूपण को 'गायत्री सहस्रनाम' से प्रस्तुत किया गया है।

गायत्री सहस्रनाम का महत्त्व पाठ-उपासना की दृष्टि से तो है ही, पर उसमें लिखे हुए गायत्री के एक हजार नाम केवल नाम मात्र ही नहीं हैं, वरन् प्रत्येक नाम में गायत्री तत्त्व में सन्निहित तत्त्वों, तथ्यों, गुणों, प्रभावों और विशेषताओं का विश्लेषण है। उन एक हजार के प्रत्येक नाम पर यदि हम ध्यान दें तो पता चलेगा कि गायत्री की कितनी बड़ी महत्ता है और उसके अंतर्गत तथ्यों का उपयोग हम अपनी किन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कर सकते हैं ?

गायत्री के उन सहस्रनामों में से कुछ नामों का विश्लेषण उपस्थित किया जाता है।

अचिन्त्यलक्षणा

यह प्रारंभ में ही स्पष्ट कर दिया गया है कि गायत्री के संपूर्ण लक्षणों, गुणों का वर्णन और विश्लेषण मानव की स्वल्प बुद्धि द्वारा संभव नहीं। उसकी गरिमा अत्यधिक विस्तृत एवं व्यापक है। अपने प्रयत्न और अनुभवों से मनुष्य ने गायत्री के एक सहस्र गुणों का पता लगाया है। इसका अर्थ यह नहीं कि गायत्री इतनी ही सीमित है। इनसे अधिक और कुछ कार्य उसकी शक्ति से नहीं हो सकता-ऐसी बात नहीं है। चेतन जगत् में जो कुछ भी हलचलें होती हैं, उन सबका संबंध गायत्री महाशक्ति से है और उन सब पर उस महाशक्ति के माध्यम से नियंत्रण स्थापित किया जा सकता है। गायत्री की सर्वांगीण संभावनाएँ अत्यधिक हैं, इतनी अधिक कि उन सबका पता लगाना तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दूर, ठीक प्रकार चिंतन कर सकना भी कठिन है। अब तक जिन एक सहस्र प्रमुख गुणों का पता इस विद्या के वैज्ञानिकों ने लगाया है उन्हीं का उल्लेख गायत्री सहस्रनाम से हुआ है।

अव्यक्ता

यों उपासना की अनिवार्य आवश्यकता के रूप में अन्य सभी साधनाओं की भाँति गायत्री का भी नाम और रूप व्यक्त करना पड़ा है। उच्चारण की दृष्टि से २४ अक्षरों में उसे स्वरबद्ध किया गया है और ध्यान का एकमात्र आधार रूप भी प्रस्तुत करके गायत्री माता की छवि में अंकित किया गया है, पर यह ध्यान रखना चाहिए कि यह नाम रूप पर आधारित माता, प्रवाह के रूप में उसी प्रकार फैली हुई हैं जैसे गरमी, सरदी, विद्युत, ईश्वर आदि सूक्ष्म एवं अदृश्य रूप से सर्वत्र फैले रहते हैं। इस दृष्टि से उसे निराकार भी कहा जा सकता है।

अमृतार्णवमध्यस्था

अमृत के समुद्र में रहने वाली गायत्री है। मस्तिष्क के मध्य में जो सहस्रार कमल है, उसके मध्य मधु कोष या अमृत घट माना है। खेचरी क्रिया करते समय जब जिह्वा को उलटकर तालु के मूल में लगाते हैं तो इसी मधुकोष से अमृत की बूँदें झरने और उसका रसास्वादन होने का अनुभव साधक को होता है। इस सहस्रार कमल पर ही विष्णु भगवान की शैय्या है। इसी को सहस्र फण वाला शेषनाग कहते हैं। इसका मध्य बिंदु जो अमृत कोष है उसी में गायत्री शक्ति का मूल निवास है। शिवजी ने गंगा को जिस प्रकार मस्तिष्क के मध्य भाग में धारण किया है, इसी प्रकार प्रत्येक साधक उस विश्वव्यापी गायत्री शक्ति को सर्वप्रथम इस अमृतार्णव में अवस्थित चुंबक केंद्र में ही धारण करता है। फिर वह शरीर मस्तिष्क के विभिन्न भागों में तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विस्तृत होता है।

व्यापक बाह्य जगत में प्रकृति का मध्यबिंदु अमृतार्णव में माना गया है। सब प्रकार के आनंदों की किरणें इसी केंद्र से उद्भूत होकर प्राणियों को नाना प्रकार के आनंदों एवं उल्लासों का रसास्वादन कराती

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं। इस अमृतार्णव केंद्र का जो रसोद्भव है, उसमें गायत्री का निवास बताया गया है। इस प्रकार यह सब प्रकार के आनंदों की मूल मानी गयी हैं।

अजिता

अर्थात—जिसे कोई जीत न सके। गायत्री की टक्कर की और कोई शक्ति नहीं है, जो उसकी प्रतिद्वंद्विता में ठहर सके या उससे अधिक बड़ी सिद्ध होकर उसे परास्त कर सके। वसिष्ठ और विश्वामित्र का उपाख्यान प्रसिद्ध ही है कि गायत्री रूपी गौ के प्रताप से वसिष्ठ जी ने राजा विश्वामित्र की विशाल सेना को भोजन से ही तृप्त नहीं किया था वरन् युद्ध होने पर गौ गायत्री ने ही सब सेना को परास्त कर दिया था। दूसरे शक्ति की उपासना से आश्चर्य चकित होकर विश्वामित्र ने राज-पाट छोड़कर तप द्वारा गायत्री को सिद्ध करके विश्व का सर्वोपरि बल उपलब्ध करने का प्रयत्न किया और उसी की सिद्धि से वे एक अलग दुनिया की स्वतंत्र रचना तक करने के लिए सफल हुए। अकेले विश्वामित्र ही नहीं, जिन्होंने भी गायत्री का साक्षात्कार किया है, उन्होंने उसे सर्वोपरि एवं अजिता ही पाया है।

अपराजिता

वह किसी से भी पराजित नहीं होतीं। संसार का कोई बड़े-से-बड़ा असुर, पाप, संकट, विघ्न या मनुष्य ऐसा नहीं जो गायत्री को चुनौती दे सके। उससे अधिक प्रबल सिद्ध हो सके, उसे पराजित कर सके। उचित रूप से साधना की हुई गायत्री संकटों को भी पछाड़ती-परास्त करती हैं, स्वयं कभी पराजित या परास्त नहीं होतीं।

अणिमा द्विगुणाधारा

अणिमा, लघिमा, महिमा आदि जो ऋद्धि-सिद्धियाँ हैं, उन चमत्कारी मानवीय गुणों की विशेषताओं का मूल आधार गायत्री ही है। अष्ट सिद्धि, नव-निधि जिन्हें उपलब्ध करके मनुष्य विभिन्न क्षेत्रों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लेता है और उनका इच्छित उपयोग करके देवताओं जैसे बल एवं ऐश्वर्य का अधिकारी बनता है, वे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऋद्धि-सिद्धियाँ गायत्री शक्ति पर ही आधारित हैं। सिद्धि साधना के मार्ग पर चलने वाले योगियों का अनादिकाल से एकमात्र आधार गायत्री ही रही हैं। अन्य साधनाओं द्वारा अस्थायी एवं हलकी-सी ही सफलता किसी साधक को भले मिली हो, पर चिरस्थायी और सर्वांगपूर्ण सिद्धियाँ तो केवल गायत्री के द्वारा ही संभव हुई हैं और हो सकती हैं।

अर्कमंडलसंस्थिता

अर्क अर्थात् सूर्य के मंडल में बैठी हुई गायत्री का ही ध्यान पूजन किया जाता है। चित्रों में गायत्री माता को सूर्य मंडल में विराजमान ही चित्रित किया गया है। इस दृश्य सूर्य को प्राणतत्व का केंद्र माना गया है। उससे केवल उष्णता या प्रकाश ही उपलब्ध नहीं होता वरन् वह समस्त संसार को प्राण भी देता है। प्राणियों में जो जीवन दिखाई देता है वह सूर्य से ही उद्‌भूत होता है। यदि सूर्य न हो तो इस पृथ्वी पर एक भी जीवित प्राणी दृष्टिगोचर नहीं हो सकता। सूर्य मंडल में जो प्राण-शक्ति के रूप में विराजमान है वह गायत्री ही है। गायत्री शब्द का यही अर्थ है। 'गय' कहते हैं प्राण को और 'त्र' कहते हैं त्राण को। प्राणों का त्राण करने वाली जो शक्ति सूर्य मंडल के माध्यम से इस पृथ्वी पर आती है वह गायत्री है। प्रकाश और उष्णता, ज्ञान और पुरुषार्थ भी उसी दिशा के दो सहायक तत्त्व हैं।

अजरा

जो कभी वृद्ध नहीं होती, जिसकी शक्ति कभी क्षीण नहीं होती, जो सदा तरुण एवं प्रचंड रहती है। प्रकृति के नियमानुसार सभी वस्तुएँ कालांतर में दुर्बल हो जाती हैं और नष्ट होकर उनका पुनर्निर्माण होता है। प्रलय होने से पूर्व पंचतत्त्व तथा उनकी तन्मात्राएँ दुर्बल हो जाती हैं। सृष्टि का कार्य साधारण रीति से चलना कठिन हो जाता है। टूटी मशीनों की भाँति सृष्टि की व्यवस्था में आए दिन गड़बड़ी होती रहती है, अंततः उनको बिगड़कर पुनर्निर्माण की आवश्यकता पड़ती है और प्रलय उपस्थित हो जाती है। जब नवनिर्माण होने पर हर तत्त्व नया और शक्ति से पूर्ण होता है, तब सतयुग में सारे काम विधिवत् चलते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं। जैसे-जैसे समय बीतता है, तत्त्व भी मानो पुराने होने लगते हैं, तो उनमें जरावस्था का प्रभाव बाद के युगों में होना आरंभ होता है। जो नियम सृष्टि की अन्य सब स्थूल-सूक्ष्म वसुंधरा पर लागू होता है वह गायत्री पर लागू नहीं होता। वह काल से प्रभावित नहीं होती। उसमें कभी भी शिथिलता या जरावस्था का विकार नहीं आता।

अजा

उसका जन्म कभी नहीं होता। परमात्मा की अभिन्न सत्ता होने के कारण वह भी परमात्मा के समान ही अजन्मा है। उसका कोई आरंभ काल नहीं। जिस प्रकार सूर्य में उष्णता ओत-प्रोत है, उसी प्रकार ब्रह्म में जो चेतनता समाई हुई है उसे गायत्री कहते हैं। साक्षी, दृष्टा, निर्विकार ब्रह्म में जो सक्रियता, विधि-व्यवस्था, भावना, आकांक्षा दिखाई देती है; सत् के साथ जो चित् आनंद जुड़ा हुआ है उसका कारण गायत्री महाशक्ति को ही समझना चाहिए। वह जन्मने व मरने वाली साधारण वस्तु नहीं है।

अकारादिज्ञकारांता

'अ' से लेकर 'ज्ञ' अक्षरों तक की वर्णमाला है। स्वर यंत्र से लेकर नाभि स्थान तक अवस्थित सूक्ष्म उपत्यकाओं में से निरंतर निकलती रहने वाली ध्वनियों के आधार पर विनिर्मित हुई है। इन ५४ ध्वनियों को कंठ से नाभि तक स्थित इन उपत्यकाओं में सन्निहित अनेक सदगुणों एवं सत्प्रवृत्तियों का बीज मंत्र समझना चाहिए। देवनागरी लिपि के स्वर व्यंजनों की बनी वर्णमाला भी एक प्रकार की मंत्र साधना है। इस वर्णमाला को बालक जब बार-बार पढ़ते हैं तो उसमें न अक्षरों से संबंधित देव शक्तियाँ जाग्रत होती हैं। इसलिए इसे देवनागरी लिपि कहते हैं। इस वर्णमाला के ५४ अक्षरों के लिए एकबार कंठ से नाभि तक आने और दूसरी बार नाभि से कंठ तक लौटने में ५४+५४=१०८ की संख्या हो जाती है। माला में १०८ दाने होने का भी यही रहस्य है। देवनागरी वर्णमाला से संबंधित सभी ५४ शक्तियाँ गायत्री स्वरूप हैं। इसलिए गायत्री को 'अकारादिज्ञकारांता' माना गया है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अरिषड्वर्गभेदिनी

(१) काम, (२) क्रोध, (३) लोभ, (४) मोह, (५) मद, (६) मत्सर यह छः वास्तविक शत्रु माने गए हैं। सांसारिक शत्रु तो कुछ देर के लिए थोड़ी आर्थिक या शारीरिक हानि ही पहुँचा सकते हैं, पर यह आंतरिक शत्रु दिन-रात साथ रहने के कारण लोक और परलोक दोनों ही नष्ट कर डालते हैं। अंत:करण की शांति, सदाशयता, सद्भाव, सत्प्रवृत्तियाँ सभी कुछ इन शत्रुओं द्वारा तहस-नहस करके उनके स्थान पर भय, रोग, शोक, चिंता, द्वेष-क्लेश, कुढ़न, असंतोष तथा नाना प्रकार की उलझनें, दुर्गुण एवं कुसंस्कार उत्पन्न हो जाते हैं। उनका परिणाम पतन एवं नरक ही होता है। गायत्री शक्ति का आविर्भाव अंत:करण में होने से यह छहों आंतरिक शत्रु दुर्बल होने लगते हैं और धीरे-धीरे वे समाप्त होते चले जाते हैं। सांसारिक शत्रुओं का भी मुकाबला जिस प्रकार कानून, दृढ़ता, चतुरता, संगठन, शस्त्रों की सहायता से तथा रोग का निवारण, चिकित्सा से किया जाता है, उसी प्रकार षड्रिपुओं के भेदन के लिए गायत्री रामबाण है।

असुरघ्नी

असुरों की असुरता का नाश करने वाली गायत्री है। किसी दुष्टता को नष्ट करने के लिए यह आवश्यक नहीं है कि उस व्यक्ति को मार ही डाला जाए। रोग निवारण के लिए ऐसा नहीं किया जाता कि रोग के साथ रोगी को भी नष्ट किया जाए। गायत्री उपासना से अंत:करण की दुष्टता सज्जनता में परिणत होने लगती है और जिस प्रकार अजामिल आदि अनेक पापी भगवान की शरण में आकर साधु-सज्जन बन गए, उसी प्रकार गायत्री की प्रकाश किरणें जिस अंत:करण पर पड़ती हैं, उनके भीतर रहने वाली असुरता की मात्रा घटनी आरंभ हो जाती है और वे सज्जन देवता बनने लगते हैं। इसके अतिरिक्त गायत्री अभिचार की तांत्रिक प्रक्रिया में वह शक्ति भी है कि असुर को जड़-मूल से भी नष्ट कर सकें, उसके कुकृत्य का समुचित दंड भी दे सकें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अलक्ष्मीघ्नी

अलक्ष्मी दरिद्रता को दूर करने वाली गायत्री है। दरिद्रता के मुख्य कारण प्रारब्ध पुण्यों की समाप्ति, आलस्य, अयोग्यता, परिस्थितियों की प्रतिकूलता, साधनों की कमी, सन्मित्रों का अभाव आदि है। गायत्री की उपासना से मनुष्य के स्वभाव में आवश्यक परिवर्तन तुरंत ही आरंभ हो जाते हैं। उसके गुणों में, कार्यों में, स्वभाव में ऐसा हेर-फेर हो जाता है कि प्रतिकूलताएँ भी अनुकूलता में बदलने लगती हैं। आलस्य के स्थान पर उत्साह, योग्यता संपादन करने की तत्परता, प्रतिस्थितियों को सुलझाने में योग्य सूझ-बूझ, स्वभाव में स्नेह-सौजन्य एवं माधुर्य बढ़ने से मित्रों की संख्या तथा उनके सहयोग की मात्रा में वृद्धि के साधन जुटने लगते हैं। मितव्ययिता का स्वभाव बनता है और जितना उपलब्ध है उतने से काम चलाने एवं संतुष्ट रहने की वृत्ति विकसित होती है। दैवी अनुग्रह के आकस्मिक अवसर भी ऐसे मिलते हैं जिनसे दरिद्रताजन्य दु:खों से छुटकारा मिलता है। आमतौर से गायत्री उपासक सदा भरे-पूरे ही रहते हैं। भूखा-नंगा, दीन-दरिद्र उनमें से कोई विरला ही मिलेगा।

आदिलक्ष्मी

जिस लक्ष्मी से हम सभी परिचित हैं वह रुपया, पैसा, सोना, चाँदी, जमीन, जायदाद आदि के रूप में देखी और समझी जाती है। यह स्थूल है, इसका महत्त्व भी मामूली-सा है। इसे उलूकवाहिनी, चंचला, माया आदि के हेय नामों से संबोधित किया जाता है। यह नशे के समान मादक और अविवेकी लोगों के लिए उनके अधिक दुर्गुण होने का कारण भी मानी जाती है। इसलिए महापुरुष इसे त्याज्य भी बताते हैं। आत्मकल्याण के तीव्र आकांक्षी इसे त्याग देते हैं और साधारण लोगों को भी इसका सीमित संचय करने एवं अपरिग्रही स्वभाव बनाने का आदेश है। पर आदिलक्ष्मी गायत्री उन २ संपदाओं की जननी है जिनका वर्णन गीता के सोलहवें अध्याय के आरंभिक तीन श्लोकों में किया गया है। इन्हें प्राप्त करने वाला विपुल रत्नराशि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के भंडार का स्वामी बनने की अपेक्षा अधिक उन्नतिशील, सुखी तथा संतुष्ट देखा जाता है। दैवी संपदाएँ जो आत्मा के लिए आत्मिक रत्नजड़ित आभूषणों के समान शोभनीय हैं। गायत्री के द्वारा ही प्राप्त होती हैं।

आदिशक्ति

संसार में अगणित शक्तियाँ अपने-अपने क्षेत्रों में काम कर रही हैं और उनके अपने-अपने महत्त्व भी हैं, पर इन शक्तियों का मूल उद्गम उस आदिशक्ति में है जिसे गायत्री कहा जाता है। सृष्टि के प्रारंभ में ब्रह्मा जी की अंत:स्फुरणा रूप में इसी का प्रादुर्भाव हुआ, पीछे सूर्य की सहस्रों किरणों के समान इस जगत् की रचना हुई और उसकी व्यवस्था गायत्री को सौंप दी गई। वही अपनी शक्तियों से विश्व का सृजन, पालन और संहार करती हैं।

आग्नेयी

गायत्री को अग्निस्वरूपा कहा गया है। अग्निहोत्र यज्ञ के द्वारा वह प्रतिष्ठित, पूजित एवं परिपुष्ट होती है। जिसकी अंतरात्मा में प्रवेश करती है, उसे समुचित उष्णता, प्रतिभा, स्फूर्ति, तेजस्विता प्रदान करती है। जैसे अग्नि में पड़ने वाली प्रत्येक वस्तु उसी के जैसे गुण और रूप की बन जाती है। उसी प्रकार गायत्री रूपी अग्नि में प्रवेश करने वाला साधक भी उस आदिशक्ति की विशेषताओं से भर जाता है। अग्नि जैसे कूड़े-करकट को जला देती है वैसे ही मल-आवरणों, ताप-पाप को, कुविचारों-कुसंस्कारों को गायत्री रूपी अग्नि जला डालती है। अग्नि प्रकाशवान है, साधक के अंत:करण में भी अज्ञानांधकार को समाप्त करने वाला प्रकाश उत्पन्न होता है। तांत्रिक विधान के अनुसार गायत्री मंत्र अभिचारात्मक 'आग्नेयास्त्र' भी बन सकता है, जो प्रचंड गोला बारूद के ढेर से भी अधिक दाहक एवं नाशक शक्ति से भरपूर होता है।

आसनस्थिता

एक स्थान पर निष्ठापूर्वक बैठने, मन को जगह-जगह न डुलाकर एक लक्ष्य पर केंद्रित करने को आसन कहते हैं। गायत्री शक्ति का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अवतरण उन्हीं मन:क्षेत्रों में होना संभव है जो सांसारिक कामनाओं और मानिसक उद्वेगों एवं आवेशों से चंचल नहीं रहते वरन् शांति, स्थिरता, निष्ठा, संतोष और प्रसन्नता को धारणकर एकाग्रतापूर्वक आत्मोन्नति की दिशा में प्रयत्नशील रहते हैं। गायत्री आसन स्थिता इसलिए कही गई हैं कि उनका अनुग्रह चंचल, अस्थिर मति के लोगों को नहीं वरन् उन लोगों को प्राप्त होता है, जो स्थान, भावना, लक्ष्य और आकांक्षा की दृष्टि से स्थिर हैं एवं दीर्घकाल तक धैर्य के साथ प्रेमपूर्वक साधना में संलग्न रहते हैं।

अंतरध्वान्तनाशिनी

संसार के सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और धार्मिक क्षेत्रों में अनेक ध्वांतियाँ और भ्रांतियाँ फैली हुई हैं। इसके कारण आए दिन नानाविध अनाचार और संघर्ष होते रहे हैं। इन्हीं के कारण लोग दिग्भ्रांत होकर अपने लिए हितकर सरल मार्ग को भूल जाते हैं और उलटी दिशा में चलकर उत्थान के स्थान पर पतन का और सुख के स्थान पर दु:ख का वरण करते हैं। जैसे संसार में अनेक ध्वनियाँ और भ्रांतियाँ हैं वैसे ही मनुष्य के अंत:करण में भी जीवनोद्‌देश्य के संबंध में भारी अंधकार एवं भ्रम भरा होता है। लोग न तो जीवन के सही लक्ष्य को समझ पाते हैं और न इसको प्राप्त करने में संलग्न होते हैं। इस अतिरिक्त विपन्नता को गायत्री दूर करती हैं। अंधकार को हटाकर प्रकाश उत्पन्न करना तथा उलझनों को सही रूप से सुलझाना गायत्री शक्ति का प्रधान कार्य है।

इष्टदा

इष्टदा अर्थात वस्तुओं को प्रदान करने वाली। कामनाओं और उनकी पूर्ति के बीच में जितना अंतर है उतना ही दु:ख इस मनुष्य जीवन में समझना चाहिए। जिसकी कामनाएँ तृप्त हैं उसे ही सुखी माना जा सकता है। आकांक्षा और परिस्थिति का ताल-मेल मिलता रहे, दोनों साथ-साथ रहें तो सदा प्रसन्नता एवं आनंद की दशा बनी रहेगी। इस स्थिति को जीवन में बनाए रखने में गायत्री बहुत ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सहायक होती है। जो कामनाएँ अपने प्रारब्ध, पराक्रम, योग्यता एवं परिस्थिति के अनुकूल हैं उनकी पूर्ति के लिए साधन जुट जाते हैं और आकांक्षाएँ अपनी सीमा और औकात से बाहर की हैं या शीघ्र ही पूर्ण होने वाली नहीं हैं तो उनके संबंध में असंतोष उत्पन्न हो जाता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि उन्नति के लिए प्रयत्न और पुरुषार्थ करने की प्रवृत्ति नष्ट हो जाती है, वरन् अपनी शक्ति, कल्पना के महल खड़े करने और उनकी पूर्ति न होने पर दुःखी होने में नष्ट करने की अपेक्षा वर्तमान से पूर्ण संतुष्ट और उत्तम भविष्य के लिए प्रयत्नशील रहने में हमारा मन लगता है। ऐसी मनोभूमि के लोग उन्नति भी करते हैं और सुखी तथा संतुष्ट रहते हैं। उनकी इष्ट कामना पूर्ण ही रहती है।

इंदुरूपिणी

इंदुरूपिणी—चंद्रमा के समान रूप वाली। चंद्रमा को शांति और शीतलता का, प्रेम और सौंदर्य का देवता माना गया है। इसकी ज्योत्सना भी इन्हीं गुणों वाली है। गायत्री में भी ऐसी ही विशेषताएँ हैं। जिस प्रकार शरद्पूर्णिमा की चाँदनी पृथ्वी पर अमृत छिड़क देती है उसी प्रकार गायत्री की पुण्यमयी किरणों के लिए जिस साधक ने अपने अंतर्द्वार खोल दिए हैं, उसमें भी सर्वत्र ऐसा ही अमृत छिड़का मिलता है। चंद्र-चकोर की प्रीति प्रसिद्ध है, आत्मा भी जिस प्रीति की प्यासी है वह दिव्य प्रेमधारा गायत्री के द्वारा ही उसे प्राप्त होती है। समस्त मंत्र नक्षत्रों के बीच गायत्री चंद्रमा के समान अपनी सर्वश्रेष्ठता के साथ सुशोभित है।

इषुसंधानकारिणी

इषु कहते हैं धनुषबाण को। उसका संधान करने वाली गायत्री की चोट बड़े-से-बड़े धनुषबाण से भी अधिक होती है। जैसे लक्ष्यबेधी बाण अपने लक्ष्य पर अचूक निशाने की तरह लगते हैं और जिस पर चोट करते हैं उसे भूमिसात बना देते हैं, इसी प्रकार गायत्री शक्ति का प्रयोग जिस लक्ष्य के लिए किया जाता है वह निष्फल नहीं जाता। लौकिक एवं पारलौकिक प्रयोजनों में जिन्होंने गायत्री का आधार ग्रहण किया है उन्हें कभी असफलता का मुँह नहीं देखना पड़ता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्राचीनकाल में जो आग्नेयास्त्र, वारुणास्त्र, पाशुपत अस्त्र, सम्मोहनास्त्र आदि अस्त्र-शस्त्र युद्धों में प्रयुक्त होते थे, उनमें मंत्र शक्ति का ही प्रधान आधार रहता है, ब्रह्मदंड-ब्रह्मास्त्र आदि अस्त्र युद्ध में तो नहीं वरन् ब्राह्मणत्व की ब्रह्मयज्ञों की रक्षा के लिए काम आते थे, इन्हीं पर ब्रह्मतेज आधारित था। परशुराम के कंधे पर जो फरसा रहता था, जिससे उन्होंने २१ बार समस्त संसार का दिग्विजय किया था, यह यही गायत्री शक्ति संपन्न ब्रह्मदंड था। गायत्री को इस प्रकार शस्त्र के रूप में भी प्रयुक्त किया जा सकता है।

इड़ापिंगलारूपिणी

ब्रह्मरंध्र से लेकर कुंडलिनी तक, सहस्रार-कमल से लेकर मूलाधार तक ब्रह्मनाड़ी में होकर दो विद्युत् शक्ति प्रवाह निरंतर बहते रहते हैं। इसमें से एक ऋण (नेगेटिव) है और दूसरी धन (पोजेटिव) है। इन्हें सूर्य शक्ति और चंद्र शक्ति भी कहते हैं। योग की भाषा में इनका नाम इड़ा और पिंगला है। यह दाँये-बाँये नासिका स्वरों के साथ प्रवाहित होती हैं। जैसे बिजली से चलने वाले सारे यंत्र दो प्रकार के ठंढे और गरम तारों के मिलने पर ही अपनी सक्रियता बनाए रखने में समर्थ होते हैं, उसी प्रकार मनुष्य का शारीरिक और मानसिक संस्थान भी इन दोनों इड़ा-पिंगला नाड़ियों पर अवस्थित है। यह दोनों प्रवाह गायत्री के ही लोम और विलोम रूप हैं। इसलिए उसे इड़ा-पिंगला रूपिणी कहा गया है।

ईश्वरीदेवी

ईश्वर को यों भाषा की दृष्टि से पुल्लिग माना जाता है, पर वस्तुतः वह लिंग भेद से बाहर है, उसे न नर कहा जा सकता है और न नारी। विद्युत्, वाष्प, अग्नि, सरदी, गरमी आदि को भाषा की दृष्टि से किसी लिंग में गिन लिया जाए, पर उन्हें तात्त्विक दृष्टि से देखा जाए, तो नर-नारी की कसौटी पर कसकर किसी भी पक्ष को घोषित नहीं किया जा सकता है, क्योंकि वे स्त्री-पुरुष दोनों के लक्षणों में रहते हैं। ईश्वर के संबंध में यही बात है। उसे भक्त अपनी भावना के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनुसार 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव' माता, पिता जो चाहे सो कह सकता है। इस प्रकार ईश्वर को पुल्लिंग बोधक शब्द संबोधन न करके यदि 'ईश्वरी' इस स्त्रीलिंग सूचक शब्द में कहा जाए, तो इससे कुछ भी दोष नहीं आता।

जिस प्रकार सूर्य और उसकी तेजस्विता एक ही वस्तु है, अलग लगने पर भी वस्तुतः एक-दूसरे से भिन्न नहीं है, उसी प्रकार ईश्वर की दिव्य शक्ति चेतना एवं सक्रियता जिसे गायत्री के नाम से पुकारते हैं, किसी भी प्रकार भिन्न नहीं है। इसी से उसे ईश्वरी देवी कहते हैं।

उषा

जिस प्रकार प्रभातकाल होने पर ब्रह्म मुहूर्त में पूर्व दिशा में उषा का उदय होता है, पौ फटती है, हलका-हलका लाल, पीला प्रकाश फैलकर सूर्य के उदय होने की पूर्व सूचना देता है तथा प्राणी मात्र में जगने-उठने और चलने की प्रेरणा प्रदान करता है, उसी प्रकार मानव अंतःकरणों में छाई हुई सघन अज्ञान अंधकार की निशा को समाप्त करने के लिए गायत्री शक्ति उषा के रूप में उदय होती है। जिसके भीतर यह उदय शुरू हुआ नहीं कि इसे अपने अंदर परमात्मा की दिव्य करणें काम करती हुई परिलक्षित होती हैं। आत्मकल्याण के लिए सजगतापूर्वक कटिबद्ध होने की किसी दैवी प्रेरणा का अनुभव उसे ही होता है और वह अनायास ही प्रभु का नाम लेकर चहचहाने लगती है एवं घोंसले की सीमा में बैठी न रहकर अनंत आकाश में उड़ने का आनंद लेने को कटिबद्ध हो जाती है, आध्यात्मिक उषा-गायत्री भी साधक के मन:संस्थान में ऐसी ही ज्योति, प्रेरणा, स्फूर्ति तथा तत्परता उत्पन्न करती है।

उडुप्रभा

उडु प्रभा—नक्षत्रों को रोशनी। तारागणों की रोशनी देखने में छोटी और तनिक-सी मालूम होती है, पर वैज्ञानिक यंत्रों से देखने पर पता चलता है कि वह जितनी मालूम देती है, वस्तुतः उससे असंख्य गुनी अधिक है। (अल्फासेंटोरो) जो हमसे सबसे निकट का तारा है पृथ्वी से इतनी दूर है कि इसके प्रकाश को हम तक आने में आठ वर्ष

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लगते हैं जबकि एक सैकंड में १८५००० मील चलता है। जो तारे हमें जरा-से दीखते हैं उनमें हजारों तारे ऐसे हैं जो पृथ्वी तो बेचारी क्या चीज-सूर्य से भी हजारों गुने बड़े हैं जबकि हमारा सूर्य ही हमारी पृथ्वी से ढाई लाख गुना बड़ा है।

तात्पर्य यह है कि तारे तथा उनकी रोशनी दीखते जरूर नन्हे-से हैं पर वस्तुतः वे इतने बड़े हैं कि उनके विस्तार की कल्पना मात्र से सिर चकराने लगता है। गायत्री के संबंध में भी यही बात है। उसे थोड़े-से अक्षरों का एक जरा-सा मंत्र कहा जा सकता है पर वस्तुतः उसकी महत्ता हमारी कल्पना शक्ति की सामर्थ्य से बहुत अधिक बड़ी है।

ऊर्ध्वकेशी

अर्थात जिसके बाल ऊपर को हों। यहाँ बालों से मतलब इन बालों से नहीं है जो सिर पर दीखते हैं और जिन्हें काढ़ा-सँभाला जाता है, वरन् मस्तिष्क से निकलने वाली इन किरणों से आशय है जो विचार-प्रवाह के रूप में, सूक्ष्म विद्युत् तरंगों के रूप में निकलती रहती हैं। गायत्री से प्रभावित मस्तिष्क सदा ही ऊर्ध्वगामी विचार करता है। ऊपर की ओर, उच्च उद्देश्यों की ओर उसकी गति रहती है, नीचे पतनकारी, अधोगामी प्रवृत्ति पर अंकुश लगता है और वह प्रवाह कुमार्ग की ओर न जाकर सन्मार्ग की दिशा में ही प्रवाहित रहता है। गायत्री अपने साधक को ऊर्ध्वगामी बनाती है और वह उच्चता की ओर दिन-दिन बढ़ते हुए अंततः ऊर्ध्व लोकों को ही प्राप्त कर लेता है।

ऊर्ध्वाधोगतिभेदिनी

आत्मविकास की दिशा में बढ़ता हुआ साधक प्रारंभ में सतोगुण और स्वर्गीय आनंदों की ओर बढ़ता है, पर जब उच्च भूमिका में पहुँचता है तो त्रिगुणातीत हो जाता है। उसकी स्थिति परमहंस गति में, स्थितप्रज्ञता में निर्विकल्प समाधि में हो जाती है। अधोगति से तो वह पहले ही छूट चुका था, उस उच्च स्थिति पर पहुँचकर वह स्वर्गीय सुखों से भी परे हो जाता है और ब्रह्मानंद से परमानंद में लीन होकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अविचल शांति का अधिकारी बनता है। इसी पूर्णावस्था तक पहुँचा देने वाली होने के कारण, समस्त शुभ-अशुभ भवबंधनों से मुक्त कर देने के कारण गायत्री ऊर्ध्वाधोगति भेदिनी अर्थात् ऊँची-नीची गतियों को समाप्त कर देने वाली कही जाती है।

ऋषिदेवनमस्कृता

ऋषियों और देवताओं द्वारा अभिनंदित गायत्री ही है। मनुष्य को ऋषि बना देने की क्षमता गायत्री में है। उसके पाशविक कुसंस्कार समाप्त होकर धर्म कर्त्तव्यों के अनुरूप विचार आवरणों की प्रधानता हो जाती है तो वह ऋषि कहलाने लगता है। ऋषि का गौरव प्राप्त कर लेना मनुष्य के लिए चक्रवर्ती शासक या कुबेर के कोष का अधिपति बन जाने से भी बढ़कर अधिक महत्त्वपूर्ण है। जब यह गौरवास्पद स्थिति प्राप्त होती है, तो वह ऋषि इस स्थान के मूल कारण गायत्री के लिए अत्यंत कृतज्ञतापूर्वक नतमस्तक होता है। ऋषि से अगली पदवी देवता की है। दिव्य गुणों, दिव्य स्वभावों, दिव्य आचरणों के कारणों को बढ़ाते-बढ़ाते वह ऋषि ही आगे चलकर अमर होकर देवता बन जाता है, तब भी उसे यही अनुभूति होती है। इस उच्च स्थिति पर पहुँचाने के लिए गायत्री रूपी सीढ़ी ही सर्व प्रधान उसकी सहायिका रही है। उसके प्रति उसका मन निरंतर शतशः प्रणाम करता रहता है। इन्हीं कारणों से गायत्री को 'ऋषि देव नमस्कृता' कहा जाता है।

ऋणहर्त्री

संसार में ऋण को सबसे बड़ा शत्रु कहा जाता है। इससे चिंता, अपमान आदि की जो विपन्न स्थिति पैदा होती है वह शारीरिक कष्टों से भी अधिक दुःख देती है। इसका कारण कभी तो आकस्मिक आपत्ति एवं आवश्यकता भी होती है पर अधिकतर खरचीला स्वभाव और किन्हीं विशेष अवसरों पर उत्साह में आकर अपनी परिस्थिति से अधिक खरच कर डालना होता है। गायत्री उपासना से मनुष्य को यह सद्बुद्धि प्राप्त होती है कि वह अपनी आमदनी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और मर्यादा से अधिक खरच नहीं करता चाहे उसे इनमें कष्ट क्यों न उठाना पड़े। ऐसे लोग एक तो ऋण ग्रस्त होते ही नहीं, यदि हो भी जाएँ तो आवश्यक खरचों में कमी करके उऋण होने का प्रयत्न करते हैं। सन्मार्गगामी साधक पर उदय होकर कभी-कभी माता ऐसा अनुग्रह भी करती है कि ऋण मुक्त होने के कोई आकस्मिक संयोग सामने आ जाएँ। धार्मिक दृष्टि से देवऋण, ऋषिगण, पितृऋण वह तीन ऋण प्रत्येक व्यक्ति पर होते हैं और उन्हें चुकाकर ही वह भवबंधनों से छूट सकता है। माता ऐसी ही प्रेरणा और आकांक्षा प्रदान करती है कि सत्कर्मों द्वारा वह तीनों ऋणों को चुकाता हुआ मानव-जीवन का उद्देश्य पूर्ण करता है। इन्हीं कारणों से गायत्री को ऋण-हर्त्री कहते हैं।

ऋषि-मंडलचारिणी

वस्तुतः गायत्री ऋषि मंडल में निवास करने वाली है। दुष्ट वासना-तृष्णा में उलझे हुए, अधोगामी प्रवृत्तियों के गुलाम न तो गायत्री की उपयोगिता जानते हैं, न मानते हैं, न उसको जीवन में धारण करने का प्रयत्न करते हैं। उनके लिए वह व्यर्थ की वस्तु है। हीरे का मूल्य घसियारा भला क्या समझ पाएगा? उसकी परख तो जौहरी ही कर सकते हैं। जिनमें विवेक की समुचित मात्रा है, वे ही गायत्री का महत्त्व जानते हैं और उससे लाभ उठाने के लिए प्राणपण से प्रयत्न करते हैं। ऋषियों के समाज में ही गायत्री का आचरण होता देखा गया है, इसी से वह ऋषि-मंडल-चारिणी है।

ऋजुमार्गस्था

कल्याण के मार्ग में अवस्थित गायत्री ही है। ऋजु, आत्मकल्याण को कहते हैं, वह बिना किसी सुनिश्चित साधना मार्ग पर चले उपलब्ध नहीं हो सकता। उच्च विचार और उज्ज्वल चरित्र रखते हुए ऋजु-मार्ग के पथिक को साधना संलग्न भी होना पड़ता है। यों अनेक साधनाएँ प्रचलित हैं, संतों ने अपनी-अपनी सूझ-बूझ के अनुसार अनेक साधन मार्ग तथा संप्रदाय चला रखे हैं। वे विभिन्न दिशाओं की ओर खींचते हैं और परस्पर भारी मतभेद से भी भरे हुए हैं। इन औंधे-सीधे मार्गों में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से किन्हीं पर भटकते रहने से अनेक व्यक्ति अपना बहुमूल्य समय भी बरबाद करते हैं। साधना का सर्वश्रेष्ठ वेदोक्त वही मार्ग है जिसको अब तक प्रत्येक ऋषि और तत्त्वदर्शियों ने अपनाया है। अनादिकाल से लेकर आज तक के शास्त्रवेत्ता एवं विज्ञ व्यक्तियों के द्वारा गायत्री उपासना का अवलंबन स्वीकार किया जाता है, उसे ही निर्भ्रांत माना गया है। ऋजु मार्ग की सीधी सड़क को गायत्री ही कहते हैं।

ऐहिकामुष्मिकप्रदा

पारलौकिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए तो गायत्री की उपयोगिता निर्विवाद है ही, इहलौकिक कामनाओं की पूर्ति में भी वह कम सहायक सिद्ध नहीं होती। यों तो यह अनुचित और असंबद्ध कामनाओं को शांत कर देती है या फिर ऐसा सुझा देती है, जिस पर चलकर मनुष्य अपनी अभीष्ट कामनाओं को प्राप्त करने के साधन जुटा सकें। दोनों में से कोई मार्ग क्यों न निकले इतना अवश्य होता है कि साधक का मन कामना से संतप्त नहीं रहता है। उसे किसी-न-किसी प्रकार मानसिक शांति का द्वार अवश्य मिल जाता है।

ओतप्रोतनिवासिनी

यों मंदिर-देवालयों में, वेदी-चौकियों में, प्रतिमाओं तथा चित्रों में, अग्नियों में, वेद मंत्रों एवं भावना सूत्रों से आह्वान करके गायत्री शक्ति को विशेष स्थानों पर स्थापित किया जाता है और वहाँ उसकी पूजा-अर्चा भी होती है। उपासना विज्ञान की दृष्टि से आवश्यक भी है। पर ऐसा न समझना चाहिए कि वह इसी स्थिति तक सीमित है। या कहीं किसी लोक विशेष में निवास करती है। उसकी सत्ता सर्वत्र समाई हुई है। प्रत्येक पदार्थ में तथा प्रत्येक व्यक्ति के अंतःकरण में वह ओत-प्रोत है। वह सर्वत्र है, कोई स्थान ऐसा नहीं जहाँ वह न हो। भावना द्वारा उसे कहीं भी प्रकट किया जा सकता है।

औपासनफलप्रदा

जिस प्रकार वर्षा, धूप आदि बिना बुलाए, बिना आमंत्रित किए चाहे जहाँ जा पहुँचते हैं और माँगने, न माँगने पर भी अपना प्रसाद हर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किसी को प्रदान करते हैं, यह बात गायत्री में नहीं है। वह केवल उसे ही फल देती है, जो उसकी उपासना करता है। साथ ही उपासना के परिणाम के अनुसार फल देती है। बछड़ा जब दूध पीने का उपक्रम करता है, तभी उसे गाय पिलाती है। यदि वह न पीना चाहे तो उसे दूध नहीं मिल सकता। फिर जितनी देर जितनी तीव्र या मंद गति से वह दूध पीता है उसी मात्रा में उसे उपलब्ध होता है। गाय बछड़े को दूध पिलाना चाहती है, पिलाती भी है, पर उसकी मर्यादा उतनी ही होती है जितना बछड़े का प्रयत्न। ठीक यही बात गायत्री के संबंध में भी है। वह उपासना के अनुपात से ही फलप्रद है । अनायास हर कोई बिना प्रयत्न के ही लाभ कर सके ऐसी छूट इस साधना में नहीं है।

कलकंठिनी

मधुर वाणी वाली गायत्री है। ऋग्वेद में जिस मधु-विद्या का वर्णन है वह गायत्री में सन्निहित मधुरता ही है। कटुता, कर्कशता, कठोर वचन बोलना, निंदा, चुगली आदि जितने भी वाणी के, कंठ के दोष हैं उन्हें दूर करने में साधक निरंतर ही प्रयत्नशील रहने लगता है और कुछ ही दिन में अपनी जिह्वा तथा भावना पर ऐसा नियंत्रण स्थापित कर लेता है कि किसी से दुर्वचन न कहे, हर किसी से मधुर और स्नेहयुक्त ही बोले तथा वैसा ही व्यवहार भी करे। कोयल को कल-कंठिनी कहते हैं। उसकी मधुर वाणी सबको प्रिय होती है, गायत्री उपासना से भी हर किसी को यह कल-कंठ प्राप्त होता है। उसका स्वर कैसा ही रहे, स्नेह-सौजन्य की समुचित मात्रा वचन में रहने से वह संगीत के समान हर किसी को मधुर लगता है, सभी उसकी इस वचन-सज्जनता से प्रभावित होकर उसके प्रति प्रेम और आदर का व्यवहार करते हैं। यही वशीकरण मंत्र भी है।

कल्याणी

कल्याण करने वाली। कभी अकल्याण की, उलटे प्रतिफल की संभावना गायत्री में नहीं है। कई तांत्रिक कौल मंत्र ऐसे होते हैं, जिनमें उच्चारण या विधान संबंधी कोई दोष रह जाए, तो उसका परिणाम उलटा हानिकारक हो जाता है, लाभ के स्थान पर हानि का, सिद्धि के स्थान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर विपत्ति का सामना करना पड़ता है। यह कठिनाई गायत्री साधना में नहीं है। उसमें कोई भूल या अशुद्धि भी हो जाए तो अधिक-से-अधिक उतनी हानि हो सकती है कि सत्परिणाम में कमी हो जाए, स्वल्प लाभ हो। पर ऐसी संभावना कभी भी नहीं है कि उससे कभी किसी का रंचमात्र भी अनिष्ट हो। वह हर किसी के लिए बाल-वृद्ध, नर-नारी, गृही-विरक्त के लिए समान रूप से कल्याणकारक है।

कालरूपिणी

काल रूपिणी—अर्थात समय साध्य एवं विकराल भी। जैसे समय पर ही वृक्ष बढ़ते एवं फलते हैं, उसी प्रकार गायत्री साधना भी उतावली करने से नहीं, आवश्यक समय व्यतीत होने पर ही फल देती है। नियमित समय पर साधना के लिए बैठना, उपासना के लिए जितना समय लगाना निश्चित किया हो, उतना नियमित रूप से लगाना, जितने समय में साधना सफल होती है, उतने समय तक धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करना, यह सफलता के लिए आवश्यक शर्त है। काल के समय के आधार पर गायत्री साधना की सफलता पर निर्भर रहने से दोष-दुर्गुण का ऐसा संहार करती है, जैसे असुर निकंदिनी दुर्गा ने महिषासुर आदि राक्षसों का वध किया था। वह साधक के सम्मुख उपस्थित संकटों, विघ्नों एवं अनिष्टों को भी कालरूपिणी बनकर मटियामेट करती है। उस विकरालता के सामने कोई भी अशुभ-अनिष्ट ठहर नहीं सकता।

कमंडलुधरा

गायत्री के चित्रों में, मूर्तियों में उसे कमंडलुधारिणी बताया है। कमंडलु का जल शांति का, स्नेह का, सद्‌भाव का, वात्सल्य का प्रतीक है। गायत्री माता के एक हाथ में वह दिव्य अमृत भरा है। उसकी गोद में चढ़कर पयपान करने का प्रयत्न करने वाले उपासक को यह कमंडलु भरा अमृत पीने का अवसर सहज ही प्राप्त हो जाता है।

कर्मनिर्मूलकारिणी

बंधन रूप कर्म वे होते हैं जो कामना, वासना, स्वार्थ एवं अहंकार की पूर्ति के लिए किए जाते हैं। जो कर्म अनासक्त भाव से कर्त्तव्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समझकर किए जाते हैं, वे साधारण प्रकार के दीखते हुए भी पुण्य परमार्थ स्वरूप बन जाते हैं। ऐसे कर्म बंधनकारक नहीं होते। गीता में कर्मयोग विस्तारपूर्वक समझाया गया है। इस तत्त्वज्ञान को गायत्री माता अपने उपासक के अंत:करण में बहुत गहराई तक प्रवेश करा देती है। उनके जीवन में ही उतार देती है, जिससे उसके किए हुए कर्म के बंधनकारी परिणाम निर्मूल हो जाते हैं।

कामदुधा

स्वर्ग में देवताओं के पास एक कामधेनु है, जो अमृतमय दूध देती है, साथ ही समस्त कामनाएँ भी पूर्ण कर देती है, इसी पृथ्वी पर भी एक कामदुधा-कामधेनु है, जिसे गायत्री कहते हैं। यह अपनी सेवा करने वाले को अगणित सद्‌गुणों का, सत्कर्मों और सत्स्वभावों का अमृतमय दूध पिलाती है, जिसे पीकर आत्मा अनंतकाल तक तृप्ति अनुभव करती रहती है। यह कामधेनु जहाँ है वहाँ अपूर्ण कामनाओं का कोलाहल दृष्टिगोचर नहीं हो सकता। कामनाएँ या तो समाप्त हो जाती हैं या फिर जो कुछ मंगलमयी आकांक्षाएँ शेष रहती हैं उनके पूर्ण होने के सुयोग बन जाते हैं।

खड्ग

खड्ग अर्थात तलवार। हिंसक, हत्यारे, दुष्ट-दानवों की दुरभिसंधि को दूर करने के लिए जैसे लपलपाती खड्ग अचूक औषधि है, उससे इनका मर्दन होता है, उसी प्रकार गायत्री रूपी तलवार भी जीवन प्रगति में बाधक विघ्न-बाधाओं एवं तापों पर ऐसा आक्रमण करती है कि उनके भयावने स्वरूप को चूर-चूर होना पड़ता है। गायत्री उपासक बड़ी-से-बड़ी बाधाओं को पार करता हुआ अपने उच्च लक्ष्य को पूर्ण करने में सफल होता है।

खेटकरी

खेटकरी अर्थात शिकार करने वाली। जिस प्रकार कोई विवेकशील शिकारी सिंह, व्याघ्र, अजगर, मगर आदि त्रासदायक बुरे जीवों का आखेट कर उनके भय से संत्रस्त लोगों को अभयदान करते हैं, उसी प्रकार गायत्री भी संसार में फैले हुए हानिकारक पतनकारी आसुरी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तत्त्वों को वैसे ही साफ करती रहती है, जैसे किसान अपने खेत में उगे हुए झाड़-झंखाड़ों को काटता-उखाड़ता रहता है। जहाँ गायत्री माता आखेट करती हुई विचरती हैं, वहाँ संतापदायक तत्त्व फलते-फूलते नहीं, उनका उन्मूलन ही होता है।

खेचरी

बंध एवं मुद्राएँ योग साधना में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। मस्तक के मध्यबिंदु त्रिकुटी में एक आध्यात्मिक अमृत कलश रहता है। जिह्वा को उलटकर तालुमूल में लगाने और अन्य नियमों के साथ उस अमृत कलश का बिंदुपान करने की विधि खेचरी मुद्रा कहलाती है। इसका विस्तृत विधान योग-ग्रंथों में मौजूद है तथा अनुभवी गुरुओं से सीखा जा सकता है। २४ मुद्राओं में खेचरी को अधिक फलप्रद माना गया है, वह गायत्री स्वरूप ही है। गायत्री साधक प्रायः उसे ही करते हैं।

खलघ्नी

खलों को, दुष्टों को मारने वाली। भगवान के अवतार का उद्देश्य 'परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्' है। इसी प्रकार भगवती गायत्री भी दुष्टों-खलों का शमन करती हैं। साधक को अपने भीतर और बाहरी क्षेत्रों में अनेक खलों से नित्य ही काम पड़ता है, इसके निराकरण में गायत्री माता का सहारा लिया जा सकता है। इन खलों को निर्मल बना देना, असंतों को संत बना देना इस महाशक्ति का प्रधान कार्य है।

गंगा

जैसे भौतिक जगत् में अनेक पाप-तापों को हरण करने वाली हरीतिमा, शीतलता, शांति और संपत्ति बढ़ाने वाली गंगा है, उसी प्रकार आध्यात्मिक क्षेत्र में भी गंगा है, जिसे गायत्री कहते हैं। शिवजी की जटाओं से लेकर गंगासागर तक जिस प्रकार वह पुण्य नदी बहती है उसी प्रकार मस्तिष्क के मध्यबिंदु ब्रह्मरंध्र से निकलकर मेरुदंड में अवस्थित ब्रह्मनाड़ी में होती हुई यह मूलाधार तक जाती है और वहाँ कुंडलिनी रूप बनाकर विराजती है। इड़ा-पिंगला के माध्यम से यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गंगा प्रवाह निरंतर ज्वार-भाटे की तरह हिलोरें लेता रहता है। इस दृश्य जगत् में गंगा स्नान करने पर भवसागर से तरना संदिग्ध हो सकता है, पर आध्यात्मिक गंगा गायत्री में अभिमज्जन करने से परम श्रेय का अधिकारी बन जाना निश्चित ही है।

गोमयी

गौ माता के समान ही गायत्री है। हिंदू धर्म की चार शक्तियाँ गौ, गंगा, गीता और गायत्री मानी गई हैं। नदियों में जिस प्रकार गंगा की तुलना गायत्री से की जाती है उसी प्रकार पशुओं में गौ माता भी गायत्री रूप है। गायत्री उपासक के लिए गोदुग्ध का सेवन, गोमूत्र से स्नान, गोमय से लिपे हुए घर में निवास, गोघृत से हवन तथा गोचारण (गौओं को चराना) साधना में सफलता प्रदान करने वाला है। गायत्री शक्ति गोमयी है। गाय के शरीर में ओत-प्रोत है। गोपालन, गोसेवा भी गायत्री उपासना का ही एक अंग है।

गीता

श्रीमद्भगवद्गीता के १८ अध्यायों में जो ज्ञान भगवान कृष्ण ने अर्जुन को दिया है, उसे गायत्री के ९ शब्दों का ही विस्तार कह सकते हैं। एक शब्द की व्याख्या दो-दो अध्यायों में की गई है। गीता के ज्ञान में मानव जीवन को उच्चकोटि का सात्विक, कर्त्तव्यपरायण एवं अनासक्त बनाने की शिक्षा दी गई है। यही शिक्षण गायत्री के २४ अक्षरों में भी है। गायत्री-गीता और गायत्री-स्मृति प्रकरण पढ़ने पर स्पष्ट हो जाता है कि जो ज्ञान इन अक्षरों में है, उसी को भगवान ने और अधिक स्पष्ट और विस्तृत रूप में अर्जुन को बताया है। गीता को भी गायत्री की व्याख्या ही मानना चाहिए।

गुणत्रयविभाविता

गायत्री सत्, रज, तम तीनों गुणों से परिपूर्ण है। जिस प्रकार वात, पित्त, कफ तीनों तत्त्व शरीर में संतुलित रहने पर ही स्वास्थ्य ठीक रहता है, उसी प्रकार सत् रज, तम तीनों ही तत्त्व मनःक्षेत्र में आवश्यक मात्रा में उपस्थित रहें तभी उसका काम ठीक प्रकार चलता है। गायत्री की इन तीनों विशेषताओं को तीन देवियों के रूप में चित्रित किया गया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है—सतोगुण की प्रतीक सरस्वती, रजोगुण की प्रतीक लक्ष्मी, तमोगुण की प्रतिनिधि काली। इन तीनों को बुद्धि, संपत्ति और शक्ति इन तीनों नामों से भी पुकारते हैं। सतोगुणी को जीवन में प्रधान माना जा सकता है, पर शरीर निर्वाह के लिए अन्न, वस्त्र, मकान आदि के रूप में रजोगुण और अपनी या दूसरे की दुष्टता के प्रति क्रोध, उससे संघर्ष के रूप में तमोगुण भी आवश्यक है। गायत्री के तीन अक्षर इन तीनों गुणों के प्रतिनिधि हैं। वह साधक को आवश्यक मात्रा में इन तीनों को ही प्रदान करती है। इसलिए गायत्री को गुणत्रयविभाविता कहा गया है।

गुणवती

आकाश गंगा एक निहारिका मात्र नहीं है, वरन् उसमें हजारों तारे भी जुड़े हुए हैं। उसी प्रकार गायत्री केवल सद्बुद्धिदायिनी मंत्र शक्ति मात्र नहीं है, वरन् उसके साथ हजारों सद्गुण समन्वित हैं। जब गंगा दिखाई देती है, तो उससे संबंधित तारे भी दृष्टिगोचर होते हैं। जिधर यह आकाश गंगा घूमती है उधर ही उसके तारे भी चलते हैं। इसी प्रकार जहाँ गायत्री का उदय होता है, वहाँ उससे संबंधित अनेक सद्गुण भी अपने आप प्रकट होने लगते हैं। उपासक को माता का अनुग्रह अनेक दिव्य गुणों के रूप में प्राप्त होता है। उसके मन, वचन और कर्म से एक-से-एक बढ़कर श्रेष्ठताएँ जब उदय होती हैं, तो जीवन तारागणों से विकसित निशा की तरह झिलमिलाने लगता है।

गुर्वी

गुर्वी कहते हैं भारी को। गायत्री को एक साधारण-सी चीज नहीं मानना चाहिए, उसकी गुरुत्ता इतनी बड़ी है कि संसार के सारे भौतिक पदार्थों को भी उसकी तुलना में तुच्छ माना जा सकता है। जिस क्षेत्र में भी गायत्री की शक्ति का चमत्कार देखा जाए वह अद्भुत और अद्वितीय दिखाई पड़ेगा। क्या लौकिक, क्या पारलौकिक, दोनों ही दिशाओं में, शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक सभी समस्याओं को सुलझाने में गायत्री असाधारण सिद्ध होती है। इसलिए उसकी गुरुता को जितना भी अधिक माना जाए कम ही रहेगा। वह वस्तुतः गुर्वी है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुह्या

गुह्य अर्थात गुप्त–छिपी हुई। यों गायत्री के २४ अक्षर प्रकट हैं। सबको मालूम है, पुस्तकों में छपे हैं फिर भी उसका सारा कलेवर छिपा हुआ है। कुछ पुस्तकों में उसका थोड़ा–सा विज्ञान प्रकट भी किया गया है, पर अभी तक जितना अप्रकट है, जितना गुप्त है, जितना रहस्यमय है, उसका अनुमान लगा सकना भी साधारण व्यक्ति के लिए कठिन है। उसके सामान्य विधान जो सर्वसाधारण के लिए उपयोगी हैं, जहाँ–तहाँ पुस्तकों में लिखे हैं, पर जो असाधारण तत्त्वज्ञान एवं महत्त्वपूर्ण रहस्य है वह अप्रकट ही रखा गया है। उस ज्ञान और रहस्य को केवल अधिकारी व्यक्ति ही सदुपयोग के लिए उपलब्ध कर सके, इसलिए उन बातों को गुप्त रखा गया है। अनुभवी मार्गदर्शक किन्हीं सत्पात्रों की प्रतीक्षा करते हैं और जब कभी ऐसे जिज्ञासु मिल जाते हैं, वे अपने अनुभव में आए हुए रहस्यों को बड़ी प्रसन्नतापूर्वक बता देते हैं, पर अनधिकारी यदि उन्हें प्राप्त कर लें तो जल्दबाजी, अस्थिरमति और अशुद्ध भावनाओं के कारण या तो साधना काल में ही अपना कुछ अनिष्ट कर बैठते हैं या फिर सफल भी हुए तो दूसरों को आश्चर्यचकित करने का एक खेल बनाने में सांसारिक कामनाओं में दुरुपयोग करते हैं। ऐसे लोगों के हाथ यह विद्या विशेषतया गायत्री का तंत्रिक पक्ष पड़ने न पाए, इसका बहुत ध्यान रखा गया है। प्रयत्न करने पर उससे भी बहुत अधिक जाना जा सकता है।

गर्वापहारिणी

गर्व का अपहरण करने वाली, घमंड एवं अहंकार को नष्ट करने वाली शक्ति गायत्री है। धन, विद्या, सत्ता, रूप, प्रभुता आदि वस्तुओं को प्राप्त करके मनुष्य इतराने लगता है, अपने को दूसरों से बड़ा समझता है और अन्यों को छोटा समझकर उनसे हेय व्यवहार करता है। यह मानसिक स्थिति मनुष्य के उथले, असंस्कृत, उद्धत एवं तुच्छ होने का चिह्न है। इस स्थिति के कारण मनुष्य आत्मिक दृष्टि से दिन–दिन अधिक पतनोन्मुख होता जाता है। उसके व्यवहार से लोगों में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्षोभ एवं रोष फैलता है-सो अलग। घमंडी आदमी एक प्रकार का असुर है, जो अनेक सद्गुणों से हाथ धो बैठता है। इसलिए गर्व को दूर किया जाना, चूर किया जाना आवश्यक है। गायत्री या तो ऐसी सद्बुद्धि देती है कि गर्व गलकर सज्जनता में परिणत हो जाए या फिर ऐसी विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न करती है, जिसकी ठोकर से गर्व चूर हो जाए। तात्पर्य यह है कि साधक का ही नहीं दूसरे अन्य उद्धत व्यक्तियों का भी वह गर्व चूर करती रहती है।

घोषा

घोष अर्थात शब्द। घोषा अर्थात शब्द स्वरूपा। शब्द को श्रुतियों में ब्रह्म माना गया है। 'शब्दो वा ब्रह्म'। शब्द की शक्ति अपार है। अखिल आकाश में व्याप्त ईश्वर में गायत्री मंत्र के स्फुट या अस्फुट उच्चारण से जो तरंगें उत्पन्न होती हैं वे विश्व के मानव मस्तिष्कों से टकराकर उनमें भी अपनी प्रतिध्वनि उत्पन्न करती हैं। जिस प्रकार उत्तम प्रवचन सुनते रहने से सुनने वालों के मस्तिष्कों में थोड़ी बहुत सद्वृत्ति बढ़ती ही है, उसी प्रकार गायत्री मंत्र का जप या उच्चारण करने से उनकी परम मंगलमयी तरंगें उठकर अगणित मस्तिष्कों के सूक्ष्म पर्दों तक टकराने लगती है। फलस्वरूप उनके मस्तिष्कों में भी किन्हीं अंशों में धार्मिकता का उदय होता है। इस प्रकार गायत्री का जप एक प्रकार से विश्व की महत्त्वपूर्ण मानसिक सेवा है। मंत्रोच्चारण से उत्पन्न ध्वनि तरंगें अपने अंतराल में छिपे हुए अनेक सूक्ष्म चक्रों एवं उपत्यकाओं को भी जाग्रत करती हैं। शब्द विज्ञान के आधार पर गायत्री मंत्र जप आत्मकल्याण का एक श्रेष्ठ साधन है।

चतुर्भुजी

चार भुजाओं वाली। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष यह चार भुजाएँ गायत्री की हैं। चारों वेद भी गायत्री की चार भुजाएँ हैं। चारों दिशाओं में यह चार भुजाएँ फैली हुई हैं। इनमें से एक भी वरदहस्त साधक के मस्तक पर पड़ जाए तो वह उसी संपदा का हितकारी होकर धन्य बन जाता है। जिसके ऊपर माता के चारों हाथों से स्नेहसिंचन हो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाता है, वह जीवन मुक्त ही है। उसे समस्त दैवी ऐश्वर्य का अधिपति ही मानना चाहिए।

चातुरी

चतुर—चतुरता, बुद्धिमत्ता। यों तो लोगों में जेब काटने से लेकर ठगने तक की, धन कमाने से लेकर मिटाने तक की अनेक प्रकार की कला-कुशलताएँ होती हैं, पर सच्ची चतुरता वह है जिसके आधार पर कोई व्यक्ति मानव-जीवन का, नर तन धारण के सौभाग्य का समुचित लाभ उठा सके। गायत्री उपासक में वह चातुरी होती है। वह व्यर्थ के खेल-खिलौनों से बच्चों की तरह न उलझकर अपनी आत्मा का कल्याण करता है, अपने परलोक को बनाता है। जिसने इस दिशा में जितनी सफलता प्राप्त कर ली उसे उतना ही बड़ा चतुर कहा जा सकता है। उसी की चातुरी सराहनीय है। गायत्री में यह सच्ची चतुरता ओत-प्रोत है।

चरित्रप्रदा

चरित्र को, आचरण को प्रशंसा योग्य बनाने में गायत्री माता बड़ा योग देती हैं। दुराचार से मन हटता है और सदाचार में प्रवृत्ति होती है। माता का अनुग्रह जिसे प्राप्त होता होगा वह चरित्र का धनी बनता जाएगा। पराई बहिन-बेटी को अपनी बहिन-बेटी से बढ़कर मानना, पराए पैसे को ठीकरी के समान समझना, दूसरों के सुख-दुःख में अपने सुख-दुःख की अनुभूति करना यह तीन विशेषताएँ उसके चरित्र में अधिकाधिक बढ़ती जाती हैं। आचार और विचार दोनों से मिलकर चरित्र बनता है। मातृभक्त न तो अशुद्ध विचार करता है और न दुष्कर्मों की ओर कदम बढ़ाता है।

ऊपर गायत्री माता के गुणों और उनकी उपासना से विकसित होने वाले गुणों का संक्षिप्त विवरण दिया है। ऐसे-ऐसे हजारों गुण और शक्तियाँ उनमें सन्निहित हैं। उन्हें चंद्रमाश्चन्दनप्रिया, छत्रधरा, छिद्रोपद्रवभेदिनी, जातवेदा, जितेंद्रिया, जितक्रोधा, जगतीजरा, ज्वरघ्नी, जितविष्टपा, झिंझिका, झल्लरी, डामरी, डिंडीरवसहा, ढक्कहस्ता, ढिलिव्रजा, नित्यज्ञाना, निरुपमा, त्रिगुणा, त्रिपदा, तरुणातरु,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तुरीयपदगामिनी, तुहिनातुरा, तनुमध्या, त्रिविष्टपा, तित्तरी, तरुणाकृति, तप्तकांचनभूषणा, त्रिकालज्ञानदायिनी, वृप्तिदा, दोहिनी, दीनवत्सला, देवयानी, दिग्वासा, दंडिनी, देवपूजिता, धात्री, धर्मचारिणी, धर्मशीला, धृतिर्धन्या, धूमकेशी, नन्द-प्रिया, नित्यशुद्धा, निरंजना, नीलग्रीवा, परमोदारा, परतेज:प्रकाशिनी, पावनी, पवनाशिनी, प्रज्ञावती, पयस्विनी, पृथुजंघा, पिंगाक्षी, प्रणवागति, पुण्यभद्रा, पाटली, पूर्णाशा, फलदा, फलकाकृति, बाल-बाला, बहुमता, बालभानुप्रभाकारा, बीजरूपिणी, बहुविक्रमा, बिंदुदर्पणाङ्गुलता, भार्गवी, भुवनेश्वरी, भूतधात्री, भीमा, भागधेयिनी, महादेवी, मधुमती, मधुमासा, मंदोदरी, मुद्रा, मलया, मागधी, मातृका, मिहिराभासा, मुग्धा, मृगाक्षी, याजुषी, यंत्ररूपिणी, यातुधानभयंकरी, रोहिणी, राकेशी, रत्नमालिका, ललिता, लुरतविषा, लोकधारिणी, वाराही, विरजा, वर्षा, शोभावती, शुभाशया, शुभ्रा, श्रीमती, षड्भाषा, सर्वज्ञा, सोमसंहिता, सद्गुणा, हिरण्यवर्णा, हंसवाहिनी, क्षोमवस्त्रा, क्षमा आदि नाम और विषयों से भी पुकारते और पूजते हैं। इन नामों में जहाँ उनके गुणों का बोध कराया जाता है वहाँ उनमें शारीरिक, मानसिक, औद्योगिक, आर्थिक, सामाजिक, लौकिक, पारलौकिक सुख-संपदाओं का ज्ञान-विज्ञान भी भरा हुआ है।

गायत्री उपासक इन कर्मों को उपासना काल से जानने लगते हैं। यदि कोई न भी बताए तो भी नैतिक उपासक इन गुणों, शक्तियों और वरदानों से स्वयमेव लाभान्वित होता चला जाता है। जिनकी श्रद्धा, निष्ठा अधिक प्रगाढ़ नहीं होती वे प्रारंभ में उतने लाभ प्राप्त नहीं करते तो भी गायत्री मंत्र की विलक्षणता यही है कि उपासक की श्रद्धा भी दिनों-दिन स्वयमेव प्रगाढ़ होती जाती है और वह उपर्युक्त गुणों को भगवती गायत्री में यथार्थ सार्थक हुआ पाता है।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org